डॉ0 राम मनोहर लोहिया के विचारों की प्रासंगिकता

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डी0 एस0 एम0 राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र.

डा0 राममनोहर लोहिया एक विश्व–नागरिक थे। अतः उनके दर्शन का विश्वव्यापी होना स्वाभाविक ही था। उनका दर्शन राष्ट्रीय सीमाओं में बhधा नहीं है। उसका चरित्र अन्तर्राष्ट्रीय है। उनके दर्शन की इस विशेषता का कारण उनका सम्यक और व्यापक दृष्टिकोण है। उनकी मान्यता थी कि ''राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्थाएh अन्योन्याश्रित होती हैं। इस आधार पर वे कहा करते थे कि यदि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर अन्याय और अत्याचार का अन्धकार व्याप्त रहता है,तो किसी भी हालत में राष्ट्रीय स्तर पर न्याय और सुव्यवस्था का प्रकाश नहीं लाया जा सकता है।''[1] इसी तरह यदि राष्ट्रीय स्तर पर विलासिता,भ्रष्टाचार और अन्याय का अन्धकार छाया रहता है,तो कभी भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर समता,सम्पन्नता और स्वतन्त्रता आदि का प्रकाश नहीं आ सकता। किसी प्रकार यदि एक ही स्तर पर सुव्यवस्था स्थापित कर भी दी जाए,तो वह कभी भी ठहर नहीं सकती। विश्व में व्याप्त अन्धकार की स्थिति में राष्ट्र का प्रकाश उसी प्रकार नहीं ठहर सकता,जिस प्रकार राष्ट्रों के आन्तरिक अनधकार में विश्व प्रकाश।दुर्भाग्यवश अभी तक विश्व में एक ओर अन्धकार रहा है तो दूसरी ओर प्रकाश। ''डा0 लोहिया की दृष्टि में एक ओर प्रकाश और दूसरी ओर अन्धकार की यह विशेषता ही इतिहास के चक्र की चालक और दुःखद निराशा का कारण रही है।''[2]

डॉ0 राममनोहर लोहिया ने गाँधी–मार्क्स–नेहरू से इतर एक ऐसे समाजवाद की कल्पना की थी, जिसका उत्स युवा वर्ग की मनोवृत्तियों में निहित है। यही कारण था कि वह एक अध्येता की भाँति आजीवन भारतीय इतिहास, भारतीय सभ्यता और संस्कृति तथा भारत में ऐसे महापुरूषों की खोजबीन करते रहे, जो स्व की चेतना से अनुप्राणित और अनुशासित हो। लेकिन ऐसे महापुरूष उन्हें आम जनता की आत्माओं में समाहित मिला, जो अपनी स्वतंत्रता के लिए छटपटा रहा था। ऐसे उदात्त चिंतक में यथार्थ चेतना और संभाव्य चेतना के प्रत्ययमूलक तंतु विद्यमान थे। विखंडन के दौर में भी वह सभी को एक सूत्र में जोड़ने की बात कर रहे थे। डॉ0 राममनोहर लोहिया संयुक्त परिवार–व्यवस्था की संरचना के दरकने और उसकी टूटन को लेकर भी चिंतित थे। मधु लिमये के शब्दों में, कहें तो ''लोहिया में एक ''भीतरी आँख'' थी, जो सपने देखती थी। उन्होंने समस्त मिथ्यावाद, पाखंड, धूल–धककड़ और गरीबी के भीतर बहने वाली 'प्रगति की अन्तर्धारा' को खोज निकाला था और उसी से 'चेतना के जगत' का विस्तार मानते थे। लोहिया इस चीज से परिचित थे कि देश में यथास्थितिवादी ताकतें मजबूत हैं, जिन पर शीघ्रता से काबू नहीं पाया जा सकता था। युगों के जड़त्व से आच्छादित विघटन, राज्य समेत सभी संस्थाओं पर अपना प्रभाव डाल चुका था। विघटन की यही स्थिति, विधानसभाओं, अदालतों, राजनीतिक दलों, प्रेस तथा अकादमिक समुदायों में भी थीं। स्वयं का संवर्धन जीवन का नियंत्रण सिद्धांत बन चुका था। बावजूद इसके उन्होंने कभी हिम्मत नहीं हारी, हार नहीं मानी। लोहिया अलग–अलग रहकर, कुर्सी पर बैठकर राजनीति

करने वाले नेता नहीं थे। वह एक स्वप्नदृष्टा तथा उसे साकार करने वाले, दोनो ही थे। उनका लक्ष्य था हमारे समाज में मौलिक परिवर्तन व उसकी पुनर्संयोजना, जो भारत को एक विश्व समुदाय में बराबर का सदस्य बना देगा।''[3]

मानव समुदाय में सामाजिक उन्मुक्तता एवं समरसता लाने में डॉ0 राममनोहर लोहिया के सामाजिक विचार सर्वाधिक तर्कसंगत एवं उत्प्रेरक हैं। इसका बहुत बड़ा कारण यह था कि डॉ0लोहिया स्वयं ही समता एवं सम्पन्नता से परिपूर्ण समाज को आदर्श समाज का रूप मानते थे। इसी को वह समाजवाद के रूप में पारिभाषित भी करते हैं। वह लिखते हैं कि ''समाजवाद बराबरी का सिद्धांत है। अगर हम सचेत न रहें तो वह गैर बराबरी का पतित सिद्धांत बन जाता है।''[4]

डा0 लोहिया का समाजवादी चिंतन क्रांतिकारी और भौतिक होने के साथ ही उसका मूल लक्ष्य समानता की स्थापना करना था। आप भारतीय समाजवाद का विकास देश की परिस्थितियों के अनुसार करने के पक्षधर थे। आपने प्रजातंत्र, राष्ट्रीय स्वतंत्रता तथा परिवर्तन की आवश्यकता को भारतीय समाजवाद का लक्ष्य बताया। डॉ0 राममनोहर लोहिया जी ने 'नवीन समाजवाद' का नारा लगाया। आपने 'नवीन समाजवाद' के पांच महत्वपूर्ण सिद्धान्त बताये जो इस प्रकार है–समानता, प्रजातंत्र, अहिंसा, विकेन्द्रीकरण तथा समाजवाद। डॉ0 लोहिया ने समाजवाद का स्वरूप निर्धारित करते हुए अपनी पुस्तक 'मार्क्स, गांधी तथा समाजवाद' में लिखा है कि ''सभी व्यक्ति, न केवल राष्ट्र की सीमाओं के अन्तर्गत, अपितु संसार में, एक समान हैं तथा बराबरी का दर्जा रखते हैं। इससे प्रत्येक प्रमुख क्षेत्र में परम्परागत संस्थाओं के रूपों में तथा उनकी मान्यताओं में परिवर्तन हो सकेगा। 'नवीन समाजवाद' का उद्देश्य केवल राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर ही रहन–सहन के ढंग को सुधारना नहीं है, अपितु समस्त संसार के लोगों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाना है। 'नवीन समाजवाद' के अन्तर्गत संसदात्मक शासन प्रणाली तथा विध्वंसात्मक तरीकों के बीच एक ऐसी व्यवस्था लागू करनी है, जो संवैधानिक तथा सिविल नाफर्मानी के तरीके के मिश्रित रूप से बनेगी।''[5]

डा0 लोहिया की दृष्टि में समाजवाद की परिभाषा के लिए समता और सम्पन्नता दोनों की एकजुटता महत्वपूर्ण है। आपका समता का सपना सत्ता के विकेन्द्रीकरण और समुदाय के क्रांतिकरण के जरिए साकार होना था। अपने सपने को आपने विश्व इतिहास और भारत इतिहास का गहन अध्ययन करके इतिहास–चक्र के सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था, जिसमें हर समाज की अंदरूनी और वैश्विक प्रक्रियाओं के दुहरे दबाव में अपने अस्तित्व की निरंतरता का सच जीने की वास्तविकता का विश्लेषण किया गया है। डॉ0लोहिया मानवीय सभ्यता में निरंतर बढ़ती निकटता के सच को जानते थे, लेकिन बगैर समता और सम्पन्नता आधारित मानव सभ्यता को संभव बनाये, वह भारत और विश्व के भविष्य को आशाजनक नहीं देखते थे।''[6] डॉ0 राम मनोहर लोहिया कहते थे कि, ''मनुष्य को अपनी जरूरतें घटाते रहना चाहिए। कुछ ऐसे हैं जो वाणी से इस सत्य का उपदेश करते हैं किन्तु अपनी खुद की आवश्यकताओं को बढ़ाने में नहीं हिचकते। ऐसे लोग छली हैं और उनकी बात करना बेकार है। ऐसे लोग जो अपनी आवश्यकताओं को घटाने अथवा न बढ़ाने की कोशिश करते हैं, चाहे उनके साधन बढ़ सकते हों, आम तौर से साधारण जनता की आवश्यकताओं को घटाने की बात नहीं करते। साधारण जनता का जीवन स्तर इतना नीचा है, विशेषकर हिन्दुस्तान जैसे देश में कि कोई जड़ ही इसको और नीचा करने की बात कहेगा। फिर भी, निजी आवश्यकताओं को न बढ़ाने की इच्छा पूर्ण अथवा सुखी जीवन का अंग है। शक्तिशाली लोगों के दिमाग में इनकी कम या ज्यादा जगह हर हालत में होनी चाहिए।''[7]

डॉ0 राममनोहर लोहिया सामाजिक समानता ,अमीरी गरीब, समान शिक्षा एवं स्वास्थ्य में समानता के सिद्धान्त पर बल देते थे। किसी भी प्रकार की असमानता या विषमता उन्हें अभीष्ट न थी। आपका मानना था कि समाजवादी व्यवस्था के अन्तर्गत समाज में लोगों को समानता के विशेष अवसर देकर दबे कुचले वर्ग के लोगों को ऊपर उठाया जाए क्योंकि हजारों वर्ष की अमीरी–गरीबी मात्र समान अवसर से ही समाप्त नहीं होगी किन्तु विशेष अवसर देकर उनमें योग्यतम को उचित स्थान दिया जाए । आपका मानना था कि सभी को समान शिक्षा और स्वास्थ्य पाने का अधिकार है कोई भी व्यक्ति इससे वंचित नहीं होना चाहिए। निर्धनता के आधार पर प्रतिभा का पलायन हो या कुण्ठा हो ऐसा नहीं होना चाहिए। आपका विचार था कि निर्धनता के कारण कभी–कभी प्रतिभा निरूद्ध हो जाती है उसे बढ़ने के अवसर नहीं मिलते अथवा अर्थाभाव में स्वास्थ्य से हाथ धोना पड़ता है। ऐसी व्यवस्था सुनिश्चित होनी चाहिए जिसमें सुदामा और कृष्ण सहपाठी बन सकें। अपना–अपना विकास अपने ढंग से कर सकें। इस व्यवस्था से अच्छे डॉक्टर, इंजीनियर, अनुसंधाता, प्रोफेसर और कुशल कारीगर बन सकते हैं तभी राष्ट्रीय चरित्र और स्वास्थ्य सर्वथा सुदृढ़ होगा।

डॉ0 लोहिया गांधी के सत्याग्रह और अहिंसा के अखण्ड समर्थक थे, लेकिन गांधीवाद को वे अधूरा दर्शन मानते थे, वे समाजवादी थे लेकिन मार्क्स को एकांगी मानते थे। वे राष्ट्रवादी थे। लेकिन विश्व सरकार का सपना देखते थे। वे आधुनिकतम आधुनिक थे, लेकिन आधुनिक सभ्यता को बदलने का प्रयत्न करते थे। वे विद्रोही तथा क्रातिकारी थे, लेकिन शान्ति तथा अहिंसा के अनूठे उपासक थे।''[8] जाति तोड़ो,अंग्रेजी हटाओ,हिमालय बचाओ,भूमि सेना बनाओ आदि उनके प्रमुख नारे थे। उन्होंने ''पिछड़ों को साठ प्रतिशत आरक्षण देने की बात कही थी।''[9]

डॉ0 राममनोहर लोहिया पहले भारतीय राजनेता थे जिन्होंने ''तिब्बत का प्रश्न उठाया। जिन्होंने सन् 1949 ई0 मे ही देश और दुनिया को इस संकट के प्रति चेतावनी दी थी। हिमालय के मनसर गाव से लेकर उत्तर पूर्व सीमांत प्रदेश की सीमाओं तक वह अपने समाजवादी साथियों के साथ अलख जगाते हुए जगह–जगह गए। भारत में दलाई लामा जी के अपने अनुयायियों सहित शरण लेने के बाद डॉ0 लोहिया ने तिब्बती युवाओं का लगातार मनोबल बढ़ाया। हिमालय पर चीनी हमले के बाद से तो दलों के दायरे से ऊपर उठकर जगह–जगह हिमालय बचाओ आन्दोलन का आयोजन किया।भारत की लोकसभा में सन् 1963 ई0 में प्रवेश करने के बाद उन्होंने संसद के मंच से हमारी तिब्बत और हिमालय नीति के दोषों को दूर करने के लिए जबर्दस्त बहसें कीं।''[10]

डॉ0 लोहिया ने धर्म को ईश्वर तथा आत्मा के साथ न जोड़कर मनुष्य एवं प्राणियों के कल्याण तथा लौकिक समृद्धि के साथ जोड़ा। डॉ0 लोहिया समाज और व्यक्ति के घनिष्ठ संबंध को साध्य और साधन के रूप में मानते थे, एक साध्य के रूप में वह सबके प्रति प्रेम की अभिव्यक्ति करता है। तथा एक साधन के रूप में वह अन्याय,दमन के विरूद्ध क्रांतिकारी क्रोध का उपकरण है। इस प्रकार डॉ0 लोहिया ने व्यक्ति और समाज को द्वंद के रूप में न लेकर उसका संतुलित संपर्क रूप समझा ,उनका यह विचार उनके मानवतावादी चिंतन के समान था।

डॉ0 लोहिया वर्ण व्यवस्था को समाज का एक कोढ़ मानते थे। आपने वर्ण और जाति में कोई भेद नही किया डॉ0 लोहिया का कहना था कि ''वर्ण व्यवस्था बल द्वारा निर्मित व्यवस्था है जिसमें गुण कर्म का कोई महत्व नहीं है।''[11] जाति एक अपरिवर्तनीय संरचना है जो विचार और कर्म में दोगलापन प्रस्तुत करती है। जाति प्रथा के उन्मूलन के लिये डॉ0 लोहिया ने

अन्तर्जातीय विवाहों और सहभोजों को महत्व दिया। आपका कहना था कि समाज और प्रशासन को इन्हें कड़ाई से लागू करना चाहिए। जातिप्रथा के उन्मूलन की दिशा में डॉ0 लोहिया ने ब्रह्मज्ञान और अद्वैतवाद की उपयोगिता को स्वीकार किया। आर्थिक दृष्टि से भी डॉ0 लोहिया ने जाति प्रथा को तोड़ने के साथ ही उन्होंने कमजोर तथा पिछड़ी जातियों को आर्थिक रूप से सबल बनाने और उनमें आत्मविश्वास की भावना जाग्रत करने की आवश्यकता पर बल दिया।

डॉ0 लोहिया की चौखम्भा योजना– डॉ0 लोहिया ने राजनीतिक विकेन्द्रीकरण का समर्थन किया। आपका कहना था कि केंन्द्रित शक्ति के कारण आम जनता शक्ति के हाथों में कठपुतली मात्र होकर रह जाती है। अपने विकेन्द्रीकरण राज्य–व्यवस्था के चार स्तंभों के रूप में ग्राम, मण्डल, प्रान्त एवं केन्द्र का प्रतिपादन किया। इस व्यवस्था के तहत राज्य में जिला अधिकारी के पद को समाप्त कर दिया जायेगा। इसमें उत्पादन, स्वामित्व व्यवस्था, कृषि सुधार योजना, विकास, शिक्षा, स्वास्थ आदि का प्रबंधन भी सम्मिलित होगा। डॉ0 लोहिया का मानना था कि देश में राजनीतिक एवं आर्थिक विकेन्द्रीकरण के द्वारा जनमानस का उत्थान संभव है। डॉ0 लोहिया ने लिखा है ''चौखम्भा राज्य की परिकल्पना में स्वालंबी गांवों ही नही वरन समझदार और जीवित गांव की धारणा है।''[12]

डा0 लोहिया लोकतांत्रिक राजनीतिक स्वतंत्रता के पक्के समर्थक थे। वे चाहते थे वाणी की स्वतंत्रता , समुदाय बनाने की स्वतंत्रता तथा निजी जीवन की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। वर्तमान में देश के औसतन आदमी रिक्शा चालक, मजदूर एवं सामान्य नागरिकों के जीवन में सुधार लाया जाना चाहिये। यह तभी सम्भव है जब कुछ नवीन दृष्टि से सोचें। इस विचारधारा का प्रारम्भ डा0 लोहिया सदृश्य व्यक्ति से ही सम्भव था। डॉ0 लोहिया यह भी इच्छा रखते थे कि उनकी अपनी दो इच्छाएंh हैं पहली यह कि बिना पासपोर्ट के दुनिया में किसी भी जगह में घूमने की छूट हो और कहीं भी मरने की आजादी हो। इन विचारों को व्यक्त कर डा0 लोहिया ने अपने शुद्ध विश्व–नागरिक होने का परिचय दिया। डा0 लोहिया एक ओर विश्व नागरिक के लिए सतत् प्रयत्नशील थे तो दूसरी ओर यह भी चाहते थे कि व्यक्तियों की निष्ठा एवं उनके मूल्यों में कमी न की जाय। इस रूप में एक घटना याद आती है जब डा0 लोहिया ने प्रजा समाजवादी दल के महामंत्री की हैसियत से केरल की सरकार द्वारा निहत्थे नागरिकों पर गोली चलाये जाने के विरोध में एक स्वर से कहा कि त्याग–पत्र दिये जायें। डॉ0 लोहिया ने इस घटना को इतना महत्व दिया कि उन्हें पार्टी से अलग होने का निर्णय लेना पड़ा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- दीक्षित ताराचन्द–डा0 राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन–लोकभारती प्रकाशन महात्मा गांधी मार्ग,इलाहाबाद–211001,पहला पेपरबैक्स संस्करण–2013,पृ0203–204
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–डा0 लोहिया : इतिहास–चक्र (*Wheel of History*), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण :1992,पृ080
- किशोर गिरिराज–अकार, त्रैमासिक पत्रिका, अगस्त–नवंबर 2010, पृष्ठ–181
- लोहिया डॉ0 राममनोहर–हिन्दू बनाम हिन्दू, लोकभारती प्रकाशन, ,इलाहाबाद, चतुर्थ पेपर बैक्स संस्करण : 2009, पृष्ठ–27

- भाटिया पी.आर.–भारतीय राजनीतिक विचारक, यूनिवर्सल बुक डिपो आगरा (उ. प्र), पृष्ठ–281
- किशोर गिरिराज–अकार, त्रैमासिक पत्रिका, अगस्त–नवंबर 2010, पृष्ठ–151
- शरद ओंकार–(संपादक)–समता और संपन्नता (डॉ0 राममनोहर लोहिया के अप्रकाशित लेख)–लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण :1996, पृष्ठ–121
- शरद ओंकार (संपादक)–लोहिया के विचार, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद, संस्करण 1990, पृष्ठ–10
- चंद्र हरीश–डा0 लोहिया की कहानी उनके साथियों की जुबानी–डा0 लोहिया–एक श्रद्धांhजलि–मा.मुलायम सिंह यादव–नोयडा न्यूज प्रा0 लि0,48 श्रद्धानन्द मार्ग–दिल्ली–110006–द्वितीय संस्करण–1994,पृष्ठ–369
- कुमारआनन्द, कुमार, मनोज – तिब्बत, हिमालय, भारत, चीन और डॉ0 राममनोहर लोहिया – अनामिका प्रकाशन,नई दिल्ली,संस्करण–2013,आमुख से
- शरद ओंकार (संपादक)–लोहिया के विचार,लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद,संस्करण 1990,पृष्ठ 100–124
- चंद्र हरीश–डा0 लोहिया की कहानी उनके साथियों की जुबानी–नोयडा न्यूज प्रा0 लि0, 48 श्रद्धानन्द मार्ग – दिल्ली – 110006 – द्वितीय संस्करण–1994,पृष्ठ 19–20